MVS FOUNDATION

FREE NOTES

PAINTING (225)

CHAPTERWISE NOTES

PAINTING

Sl. No.	Module	Chapters (Public Examination)	Marks
1	**Module 1: . Introduction of Indian Art**	**L-1:** History of Art (3000 BC to 600 AD) **L-2:** History of Art (7th AD to 12th AD)	12
2	**Module 3: Introduction of Contemporary Indian Art**	**L-8:** Pioneers of Contemporary Art **L-9:** Contemporary Indian Art	10

Component	Details	Marks
Public Exam (Selected Modules 1,3)	Total Chapters : 4	22
Practical Exam	Practical	70
TMA	Tutor Marked Assignment	6
Final Possible Marks		**98 Marks**

विषय- सूची

1	3000 ई.पू. से 600 ईस्वी तक कला का इतिहास तथा मूल्यांकन
2	सातवीं से बारहवीं शताब्दी तक कला का इतिहास तथा मूल्यांकन
3	समकालीन भारतीय कला के पुरोगामी कलाकार
4	समकालीन भारतीय कला

1

3000 ई.पू. से 600 ईस्वी तक कला का इतिहास तथा मूल्यांकन

परिचय

3000 ईसा पूर्व से 600 ईस्वी तक का काल भारतीय कला के विकास का महत्वपूर्ण दौर रहा, जिसमें मूर्तिकला, चित्रकला और वास्तुकला ने क्रमशः परिपक्व रूप प्राप्त किया। सिंधु घाटी की नृत्यांगना से लेकर अजंता के भित्ति-चित्रों तक यह यात्रा भारतीय कलाकारों की तकनीकी कुशलता, सौंदर्यबोध और रचनात्मक उत्कृष्टता को दर्शाती है।

नृत्यांगना / नाचती हुई लड़की

बुनियादी सूचना

- सिंधु घाटी सभ्यता की **धातु मूर्ति।**
- स्थान — **मोहनजोदड़ो।**
- आकार — लगभग **4 इंच।**
- संग्रह — **भारतीय संग्रहालय, नई दिल्ली।**

शीर्षक : नृत्यांगना

- **माध्यम :** धातु (मेटल)
- **समय (युग) :** हड़प्पा काल (2500 ई.पू.)
- **चित्रकार/शिल्पकार :** अज्ञात

सामान्य विवरण

- पतली, लंबी और लयात्मक आकृति।
- हाथों में चूड़ियाँ और विशिष्ट केश-विन्यास।
- खड़ी मुद्रा — एक हाथ कमर पर।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- धातु कला की तकनीकी कुशलता का उदाहरण।
- छोटी आकृति होने पर भी प्रभावशाली प्रस्तुति।

रामपुरवा बुल कैपिटल

बुनियादी सूचना

- **अशोक स्तंभ शीर्ष** का उदाहरण।
- प्राप्ति स्थान — **रामपुरवा।**
- वर्तमान संग्रह — **भारतीय संग्रहालय, कोलकाता।**
- आकार — लगभग **7 फीट।**

शीर्षक : रामपुरवा बुल कैपिटल

- **माध्यम :** पॉलिश किया हुआ बलुआ पत्थर
- **समय (युग)** : मौर्य काल (तीसरी सदी ई.पू.)
- चित्रकार/शिल्पकार : अज्ञात

सामान्य विवरण

- उल्टे कमल आकार का आधार।
- ऊपर शीर्षफल और बैल आकृति।
- अत्यंत सूक्ष्म नक्काशी और पॉलिश।
- बैल की शक्ति और सौंदर्य का यथार्थ चित्रण।
- मौर्यकालीन शिल्पकला की उत्कृष्टता।

अश्वेत राजकुमारी

बुनियादी सूचना

- **अजंता गुफाओं** की भित्ति-चित्रकला।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- स्थान — **अजंता (महाराष्ट्र)।**
- अजंता गुफाएँ — लगभग 30।
- उपयोग — चैत्य (पूजा) और विहार (निवास)।

शीर्षक : अश्वेत राजकुमारी

- **माध्यम :** भित्ति-चित्र
- **समय :** दूसरी से छठी सदी ईस्वी (गुप्त-वाकाटक काल)
- चित्रकार : अज्ञात

सामान्य विवरण

- अजंता चित्र **टेम्परा विधि** से बनाए गए।
- धार्मिक विषय प्रमुख, पर कलात्मक अभिव्यक्ति भी।
- रेखाओं का संतुलन और चेहरे का हल्का झुकाव।
- आँखों की नक्काशी और रंगों की कोमलता।
- आकृतियों में लयात्मकता और सौंदर्य।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

TOP 5 QUESTIONS

प्रश्न-1. नृत्यांगना मूर्ति की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- नृत्यांगना सिंधु घाटी की धातु मूर्ति है जो मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुई। आकृति पतली, लंबी और लयात्मक है। हाथों में चूड़ियाँ और विशिष्ट केश-विन्यास दिखाई देता है। खड़ी मुद्रा में एक हाथ कमर पर है। यह धातु शिल्पकला की तकनीकी कुशलता दर्शाती है।

प्रश्न-2. रामपुरवा बुल कैपिटल का वर्णन कीजिए।

उत्तर- रामपुरवा बुल कैपिटल मौर्यकालीन अशोक स्तंभ शीर्ष का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह पॉलिश किए हुए बलुआ पत्थर से बना है। उल्टे कमल आधार, शीर्षफल और बैल आकृति इसकी विशेषताएँ हैं। सूक्ष्म नक्काशी और चमकदार पॉलिश मौर्य शिल्पकला की श्रेष्ठता दर्शाती है।

प्रश्न-3. अजंता चित्रकला की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- अजंता चित्रकला भित्ति-चित्र पर आधारित है और टेम्परा विधि से बनाई गई। धार्मिक विषय प्रमुख हैं। चित्रों में संतुलित रेखाएँ, कोमल रंग, चेहरे का हल्का झुकाव और भावपूर्ण आकृतियाँ दिखाई देती हैं। यह गुप्तकालीन कला की उत्कृष्ट उपलब्धि मानी जाती है।

प्रश्न-4. गुप्त काल को कला का स्वर्ण युग क्यों कहा जाता है?

उत्तर- गुप्त काल में मूर्तिकला, चित्रकला और वास्तुकला का व्यापक विकास हुआ। कलाकारों को संरक्षण मिला और तकनीकी कुशलता बढ़ी। मानव आकृतियों के प्रस्तुतीकरण में सुधार हुआ। अजंता चित्रों जैसी उत्कृष्ट कृतियाँ बनीं, इसलिए इसे भारतीय कला का स्वर्ण युग कहा जाता है।

प्रश्न-5. मौर्यकालीन मूर्तिकला की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- मौर्यकालीन मूर्तिकला में पत्थर पर उत्कृष्ट नक्काशी और चमकदार पॉलिश प्रमुख है। अशोक स्तंभ इसके महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। आकृतियाँ यथार्थवादी और शक्तिशाली दिखाई देती हैं। कमल आधार, शीर्षफल और पशु आकृतियों का प्रयोग इसकी विशिष्ट शैली को दर्शाता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

2

सातवीं से बारहवीं शताब्दी तक कला का इतिहास तथा मूल्यांकन

परिचय

सातवीं से बारहवीं शताब्दी का काल भारतीय कला में मंदिर वास्तुकला और मूर्तिकला के उत्कर्ष का महत्वपूर्ण दौर रहा। इस समय पल्लव, चोल, होयसाल और गंग वंशों के संरक्षण में भव्य मंदिर, उभरी मूर्तियाँ और सूक्ष्म नक्काशी का विकास हुआ। इस युग की कला तकनीकी परिपक्वता, लयात्मकता और सौंदर्यपूर्ण अभिव्यक्ति के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध है।

अर्जुन का चिंतन अथवा गंगावतरण

बुनियादी सूचना

- पल्लव काल की **उभरी मूर्तिकला**।
- स्थान — **महाबलीपुरम (मामल्लपुरम)**।
- दो शिला खंडों पर निर्मित विशाल रचना।
- मानव, पशु और देव आकृतियों का समूह।

शीर्षक : अर्जुन का चिंतन अथवा गंगावतरण

- **माध्यम** : पत्थर
- **समय** : पल्लव काल (7वीं सदी)
- **चित्रकार/शिल्पकार** : अज्ञात
- **आकार :** 91फीट x 152 फीट (लगभग)

सामान्य विवरण

- आकृतियों में **गति और प्रवाह**।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- देव, योगी, पशु और मानव का संयोजन।
- बीच की दरार की ओर सभी आकृतियाँ उन्मुख।
- शिव द्वारा गंगा धारण का दृश्य / अर्जुन तपस्या व्याख्या।
- सूक्ष्म निरीक्षण और यथार्थ प्रस्तुति।

गोवर्धन पर्वत को उठाते हुए कृष्ण

बुनियादी सूचना

- **होयसाल कालीन मूर्तिकला** का उदाहरण।
- स्थान — **बेलूर**।
- मंदिर वास्तुकला से जुड़ी सजावटी मूर्तियाँ।

शीर्षक : गोवर्धन पर्वत को उठाते हुए कृष्ण

- **माध्यम** : **पत्थर**
- **समय** : **होयसाल काल**
- **चित्रकार/शिल्पकार** : **अज्ञात**

सामान्य विवरण

- गहरी **नक्काशी** और सूक्ष्म विवरण।
- कृष्ण केंद्र में मुख्य पात्र।
- विभिन्न स्तरों में दृश्य संयोजन।
- शरीर की **लयात्मकता** और कोमलता।
- पशु और मानव आकृतियों का जीवंत चित्रण।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

कोणार्क की सुरसुन्दरी

बुनियादी सूचना

- **कोणार्क सूर्य मंदिर** से संबंधित मूर्तिकला।
- स्थान — **कोणार्क, ओडिशा**।
- गंग वंश कालीन कला।

शीर्षक : कोणार्क की सुरसुन्दरी

- **माध्यम** : **पत्थर**
- **समय** : **गंग वंश (12वीं सदी)**
- **चित्रकार/शिल्पकार** : **अज्ञात**

सामान्य विवरण

- संगीतज्ञ स्त्री आकृति — हाथ में **ड्रम**।
- आकृति में **लय, गति और सौंदर्य**।
- गहरी नक्काशी और सूक्ष्म विवरण।
- बड़े आकार के बावजूद कोमल प्रस्तुति।
- आभूषण, वेशभूषा और मुद्रा संतुलित।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

TOP 5 QUESTIONS

प्रश्न-1. अर्जुन का चिंतन / गंगावतरण का वर्णन कीजिए।

उत्तर- अर्जुन का चिंतन पल्लव काल की उभरी मूर्तिकला है जो महाबलीपुरम में स्थित है। यह पत्थर पर निर्मित विशाल रचना है जिसमें देव, मानव और पशु आकृतियाँ समूह रूप में दिखाई देती हैं। आकृतियों में गति, प्रवाह और सूक्ष्म नक्काशी इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं।

प्रश्न-2. होयसाल मूर्तिकला की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- होयसाल मूर्तिकला में पत्थर पर गहरी नक्काशी और सूक्ष्म विवरण प्रमुख हैं। आकृतियों में कोमलता, लयात्मकता और जटिल सजावट दिखाई देती है। मंदिरों की सजावट में इन मूर्तियों का महत्वपूर्ण स्थान है और दृश्य संयोजन कई स्तरों में प्रस्तुत किया जाता है।

प्रश्न-3. गोवर्धन पर्वत उठाते हुए कृष्ण मूर्ति का वर्णन करें।

उत्तर- यह होयसाल कालीन पत्थर की मूर्ति है जिसमें कृष्ण को केंद्र में मुख्य पात्र के रूप में दिखाया गया है। दृश्य विभिन्न स्तरों में संयोजित है। आकृतियों में लय, कोमलता और सूक्ष्म नक्काशी दिखाई देती है, जिससे मूर्ति जीवंत और प्रभावशाली बनती है।

प्रश्न-4. कोणार्क की सुरसुन्दरी की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- कोणार्क की सुरसुन्दरी गंग वंश कालीन पत्थर की मूर्ति है। इसमें संगीतज्ञ स्त्री को ड्रम बजाते हुए दिखाया गया है। आकृति में लय, गति और सौंदर्य दिखाई देता है। गहरी नक्काशी, आभूषण और संतुलित मुद्रा इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं।

प्रश्न-5. सातवीं से बारहवीं शताब्दी की कला की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- इस काल में मंदिर वास्तुकला और मूर्तिकला का व्यापक विकास हुआ। पल्लव, चोल, होयसाल और गंग वंशों का संरक्षण मिला। पत्थर पर सूक्ष्म नक्काशी, जटिल सजावट और लयात्मक आकृतियाँ प्रमुख रहीं। भव्य मंदिर और उभरी मूर्तियाँ इस युग की पहचान हैं।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

3

समकालीन भारतीय कला के पुरोगामी कलाकार

परिचय

उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में भारतीय चित्रकला ने नए विचारों, तकनीकों और शैलियों के साथ आधुनिक रूप ग्रहण किया। इस काल में कलाकारों ने पारंपरिक भारतीय कला और पाश्चात्य प्रभावों के बीच संतुलन स्थापित करते हुए समकालीन भारतीय कला की नई दिशा तय की।

हंस दमयंती

शीर्षक : हंस दमयंती

- **माध्यम** : कैनवास पर तैल रंग
- **समय** : 1899
- **कलाकार** : राजा रवि वर्मा
- **संग्रह** : नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट, नई दिल्ली

सामान्य विवरण

- पौराणिक कथा आधारित चित्र।
- दमयंती हंस से नल का संदेश सुनती हुई।
- स्त्री आकृति — कोमल, सुंदर, भावपूर्ण।
- **पाश्चात्य तकनीक** का प्रभाव।
- रंगों के मिश्रण और यथार्थवाद प्रमुख।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

ब्रह्मचारी

शीर्षक : ब्रह्मचारी

- **माध्यम** : कैनवास पर तैल रंग
- **समय** : 1938
- **कलाकार** : अमृता शेरगिल
- **संग्रह** : नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट, नई दिल्ली

सामान्य विवरण

- पाँच पुरुष आकृतियाँ — आश्रम के ब्रह्मचारी।
- सरल संरचना और स्थिर मुद्रा।
- रंगों का संतुलित प्रयोग।
- भारतीय जीवन और आस्था का चित्रण।
- आकृतियों में भाव और मनोवैज्ञानिक गहराई।

द एट्रियम

शीर्षक : द एट्रियम

- **माध्यम** : कागज पर जलरंग
- **समय** : 1920
- **आकार** : 12.5 × 9.5 इंच
- **कलाकार** : गगनेन्द्रनाथ टैगोर
- **संग्रह** : रवीन्द्र भारती सोसायटी, कोलकाता

सामान्य विवरण

- **घनवाद शैली** का प्रभाव।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- ज्यामितीय आकृतियों से संरचना।
- प्रकाश और छाया का प्रयोग।
- सीमित रंगों से रहस्यमय प्रभाव।
- आधुनिक शैली और प्रयोगशीलता।

TOP 5 QUESTIONS

प्रश्न-1. हंस दमयंती चित्र का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

उत्तर- हंस दमयंती राजा रवि वर्मा की प्रसिद्ध पौराणिक चित्रकृति है। इसमें दमयंती हंस से नल का संदेश सुनती दिखाई गई है। चित्र कैनवास पर तैल रंग से बना है। स्त्री आकृति कोमल, भावपूर्ण और यथार्थवादी है तथा इसमें पाश्चात्य तकनीक का प्रभाव दिखाई देता है।

प्रश्न-2. अमृता शेरगिल की चित्रकला की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- अमृता शेरगिल की चित्रकला में भारतीय जीवन, भाव और सामाजिक यथार्थ का चित्रण मिलता है। रंगों का संतुलित प्रयोग, सरल संरचना और मनोवैज्ञानिक गहराई इसकी विशेषता है। उन्होंने भारतीय और पाश्चात्य शैलियों का समन्वय करते हुए आधुनिक भारतीय कला को नई दिशा दी।

प्रश्न-3. ब्रह्मचारी चित्र का वर्णन कीजिए।

उत्तर- ब्रह्मचारी अमृता शेरगिल की 1938 की चित्रकृति है जिसमें आश्रम के पाँच ब्रह्मचारी दर्शाए गए हैं। आकृतियाँ स्थिर और सरल संरचना में हैं। रंगों का संतुलित प्रयोग किया गया है। चित्र भारतीय जीवन, आस्था और भावनात्मक गहराई को प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत करता है।

प्रश्न-4. द एट्रियम चित्र की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- द एट्रियम गगनेन्द्रनाथ टैगोर की चित्रकृति है जिसमें घनवाद शैली का प्रभाव दिखाई देता है। ज्यामितीय आकृतियों से संरचना बनाई गई है। प्रकाश और छाया के प्रयोग से रहस्यमय प्रभाव उत्पन्न होता है। सीमित रंग योजना चित्र को आधुनिक और प्रयोगशील बनाती है।

प्रश्न-5. समकालीन भारतीय कला की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- समकालीन भारतीय कला में नए प्रयोग, विविध शैली और तकनीक दिखाई देती है। कलाकारों ने भारतीय परंपरा और पाश्चात्य प्रभावों का समन्वय किया। सामाजिक जीवन, भाव और आधुनिक विषय प्रमुख रहे। संरचना, रंग प्रयोग और व्यक्तिगत शैली इस कला की मुख्य विशेषताएँ हैं।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

4

समकालीन भारतीय कला

परिचय

समकालीन भारतीय कला की भूमिका में कलाकारों ने नई तकनीकों, माध्यमों और प्रयोगशील दृष्टिकोण के माध्यम से चित्रकला को आधुनिक स्वरूप दिया। इस काल में प्रिंटमेकिंग, भित्तिचित्र और प्रयोगात्मक शैली के माध्यम से कला ने व्यक्तिगत अभिव्यक्ति और नए विचारों को प्रमुख स्थान दिया।

व्हर्लपूल

शीर्षक : व्हर्लपूल

- **कलाकार** : कृष्ण रेड्डी
- **समय** : 1962
- **आकार** : 37.5 × 49.5 सेमी
- **माध्यम** : कागज पर उकेरी आकृति

सामान्य विवरण

- **प्रिंटमेकिंग** लोकप्रिय कला विधा।
- तकनीक — **इंटैग्लियो**।
- प्लेट पर रेखाएँ उकेरकर स्याही भरना।
- परिचित वस्तुएँ अमूर्त रूप में परिवर्तित।
- प्रकृति के प्रभाव को चित्रित करने का प्रयास।
- अंतरिक्षीय भंवर जैसी संरचना।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

मीडीवल सेंट्स

शीर्षक : मीडीवल सेंट्स

- **कलाकार** : बिनोद बिहारी मुखर्जी
- **समय** : 1947
- **माध्यम** : भित्ति-चित्र
- **स्थान** : शांतिनिकेतन — हिंदी भवन दीवार

सामान्य विवरण

- विभिन्न धर्मों के संतों का चित्रण।
- लंबी मानव आकृतियाँ — लयात्मक प्रवाह।
- **फ्रेस्को बुओनो तकनीक** का प्रयोग।
- सीमित रंग — **भूरा, पीला, मिट्टी रंग**।
- रेखाओं में सुलेख गुण।
- आध्यात्मिक अभिव्यक्ति प्रमुख।

वर्ड्स एंड सिम्बॉल्स

शीर्षक : वर्ड्स एंड सिम्बॉल्स

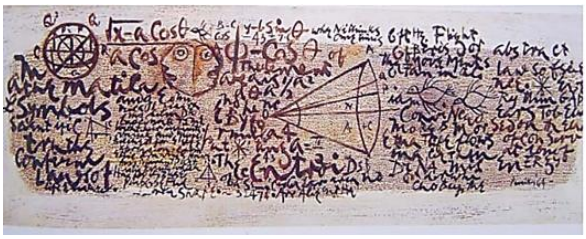

- **कलाकार** : के. सी. एस. पनिकर
- **समय** : 1965
- **माध्यम** : लकड़ी के बोर्ड पर तैल रंग
- **आकार** : 43 × 124 सेमी

सामान्य विवरण

- प्रयोगात्मक चित्र श्रृंखला का भाग।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- **सुलेख** से स्थान भरना।
- गणितीय चिह्न, लिपियाँ और प्रतीक प्रयोग।
- ज्यामितीय और अमूर्त संरचना।
- रंगों का सीमित प्रयोग।
- प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति प्रमुख।

लैंडस्केप इन रेड

शीर्षक : लैंडस्केप इन रेड

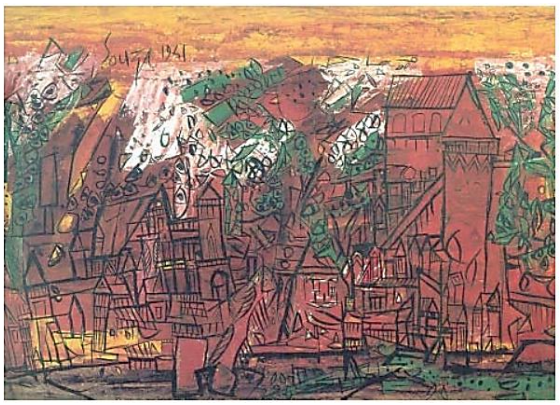

- **कलाकार** : एफ. एन. सूज़ा
- **समय** : 1961
- **माध्यम** : तैल रंग
- **संग्रह** : जहांगीर निकोलसन संग्रहालय

सामान्य विवरण

- प्रयोगात्मक शहरी दृश्य चित्रण।
- मुख्य रंग — **लाल**।
- रेखा और रंग का संयोजन।
- पारंपरिक परिदृश्य नियमों से भिन्न प्रस्तुति।
- गहराई और संरचना स्पष्ट।
- सामाजिक-धार्मिक विचारों की अभिव्यक्ति।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

TOP 5 QUESTIONS

प्रश्न-1. व्हर्लपूल चित्र का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

उत्तर- व्हर्लपूल कृष्ण रेड्डी की प्रसिद्ध प्रिंटमेकिंग कृति है, जो इंटैग्लियो तकनीक से बनाई गई है। इसमें उकेरी रेखाओं द्वारा अमूर्त संरचना प्रस्तुत की गई है। चित्र में प्रकृति के प्रभाव और अंतरिक्षीय भंवर जैसी संरचना दिखाई देती है, जिससे गतिशीलता और प्रयोगशीलता व्यक्त होती है।

प्रश्न-2. फ्रेस्को बुओनो तकनीक क्या है?

उत्तर- फ्रेस्को बुओनो भित्ति-चित्र बनाने की तकनीक है जिसमें रंगों को पानी में मिलाकर गीले प्लास्टर पर लगाया जाता है। रंग दीवार का हिस्सा बन जाते हैं, जिससे चित्र स्थायी और टिकाऊ होता है। यह तकनीक पारंपरिक भित्ति-चित्रों में महत्वपूर्ण मानी जाती है।

प्रश्न-3. मीडीवल सेंट्स चित्र की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- मीडीवल सेंट्स बिनोद बिहारी मुखर्जी का भित्ति-चित्र है जिसमें विभिन्न धर्मों के संतों का चित्रण है। लंबी आकृतियों में लयात्मक प्रवाह दिखाई देता है। सीमित रंग योजना और सुलेखात्मक रेखाएँ इसकी विशेषता हैं तथा आध्यात्मिक अभिव्यक्ति प्रमुख रूप से दिखाई देती है।

प्रश्न-4. वर्ड्स एंड सिम्बॉल्स चित्र का वर्णन कीजिए।

उत्तर- वर्ड्स एंड सिम्बॉल्स के. सी. एस. पनिकर की प्रयोगात्मक चित्रकृति है। इसमें सुलेख, गणितीय चिह्न और लिपियों से संरचना बनाई गई है। चित्र अमूर्त शैली पर आधारित है तथा सीमित रंग प्रयोग के साथ प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति को प्रमुखता दी गई है।

प्रश्न-5. लैंडस्केप इन रेड चित्र की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- लैंडस्केप इन रेड एफ. एन. सूज़ा की प्रयोगात्मक चित्रकृति है जिसमें शहरी दृश्य अमूर्त रूप में प्रस्तुत है। मुख्य रंग लाल है। रेखा और रंग के संयोजन से संरचना बनाई गई है तथा पारंपरिक परिदृश्य नियमों से अलग आधुनिक शैली दिखाई देती है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/